[This question paper contains 8 printed pages.]

(11) Your Roll No 2022

Sr. No. of Question Paper : 3009 A

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) Hindi – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10+10+10)

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

(क) नीति-शास्त्र और साहित्य-शास्त्र का लक्ष्य एक ही है, केवल उपदेश की विधि में अंतर है। नीति-शास्त्र तर्कों और उपदेशों के द्वारा बुद्धि और मन पर प्रभाव डालने का यत्न करता है, साहित्य ने अपने लिए मानसिक अवस्थाओं और भावों का क्षेत्र चुन लिया है। हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में

पहुँचकर साहित्य-सृजन की प्रेरणा देती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति जागृत न हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं। पुराने जमाने में समाज की लगाम मजहब के हाथ में थी। मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था और वह भय या प्रलोभन से काम लेता था। पुण्य-पाप के मसले उसके साधन थे। अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। वह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

वर्तमान युग की ऐसी प्रवृत्ति है। जब मानसिक बंधनों की बाधा घातक समझ पड़ती है और इन बंधनों को कृत्रिम और अवास्तविक माना जाने लगता है। यथार्थवाद क्षुद्रों का ही नहीं, अपितु महानों का भी है। वस्तुतः यथार्थवाद का मूल भाव है- वेदना। जब सामूहिक चेतना छिन्न-भिन्न होकर पीड़ित होने लगती है, तब वेदना की विवृत्ति आवश्यक हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं- साहित्यकार को आदर्शवादी होना चाहिए और सिद्धांत से ही

आदर्शवादी धार्मिक प्रवचन कर्ता बन जाता है। वह समाज को कैसा होना चाहिए, यही आदेश करता है। और यथार्थवादी सिद्धांत से ही इतिहासकार से अधिक कुछ नहीं ठहरता, क्योंकि यथार्थवाद इतिहास की संपत्ति है। वह चित्रित करता है कि समाज कैसा है या था, किन्तु साहित्यकार न तो इतिहासकर्ता है और न धर्म शास्त्र प्रणेता। इन दोनों के कर्तव्य स्वतंत्र हैं। साहित्य इन दोनों की कमी को पूरा करने का काम करता है। साहित्य, समय की वास्तविक स्थिति क्या है, इसको दिखाते हुए भी उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थिर करता है। दु:ख-दग्ध जगत और आनंदपूर्ण स्वर्ग का एकीकरण साहित्य है, इसलिए असत्य अघटित घटना पर कल्पना को वाणी महत्वपूर्ण स्थान देती है, जो निजी सौंदर्य के कारण सत्य-पद पर प्रतिष्ठित होती है। उसमें विश्वमंगल की भावना ओत-प्रोत रहती है।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

(ख) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केंद्र ही नहीं हैं, मनुष्यों में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्राह्मण में वह भले ही निर्गुण निर्विकार हों, मानव रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही गतिशील प्रतिबिंब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृ भक्ति, भातृ प्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की

रक्षा करना न था। राग की गानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राग का प्रेग उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक संबंध हैं। समाज में चाहे दुखी-दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं। तुलसी के राम न्याय-अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं हैं। वह न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं। लक्ष्मण के मुकाबले वह ज्यादा धैर्य दिखाते हैं, लेकिन उनके धैर्य की एक सीमा है। सीमा पार होने पर वह शस्त्र उठाने में जरा भी आगा-पीछा नहीं करते। यह गुण हमारी जनता का विशेष गुण है। वह बड़ी सहनशील है लेकिन एक सीमा तक ही।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

प्रयोग का हमारा कोई वाद नहीं है, इसको और भी स्पष्ट करने के लिए एक बात हम और कहें। प्रयोग निरंतर होते आये हैं और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला, कोई भी रचनात्मक कार्य, आगे बढ़ सका है। जो कहता है कि मैंने जीवन-भर कोई प्रयोंग नहीं किया, वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन भर कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा;

ऐसा व्यक्ति अगर सच कहता है तो यही पाया जायेगा कि उसकी 'कविता' कविता नहीं है; उसमें रचनात्मकता नहीं है, वह कला नहीं शिल्प है, हस्तलाघव है। जो उसी को कविता मानना चाहते हैं, उनसे हमारा झगड़ा नहीं है। झगड़ा हो ही नहीं सकता। क्योंकि हमारी भाषाएं भिन्न हैं, और झगड़े के लिए भी साधारणीकरण अनिवार्य है। लेकिन इस आग्रह पर स्थिर रहते हुए भी हमें यह भी कहना चाहिए कि केवल प्रयोगशीलता ही किसी रचना को काव्य नहीं बना देती। हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्त्व नहीं है, महत्त्व उस सत्य का है जो प्रयोग द्वारा हमें प्राप्त हो। 'हमने सैकड़ों प्रयोग किये हैं' यह दावा लेकर हम पाठक के सामने नहीं जा सकते, जब तक हम यह न कह सकते हों कि 'देखिए हमने प्रयोग द्वारा यह पाया है।' प्रयोगों का महत्त्व कर्ता के लिए चाहे जितना हो, व सत्य की खोज की लगन उसमें चाहे जितनी उत्कट हो; सहृदय के निकट वह सब अप्रासंगिक है।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

(ग) अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता है। उस संघर्ष में अभिव्यक्ति के स्तर पर आते-आते, हमारे मनोमय तत्त्व-रूप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान में भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान-परंपरा और भाव-परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द-संयोग बने हुए

हैं, उन शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े जो अर्थानुषंगों हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, सगशील-सगरूप अर्थानुषंगो को आत्मसात कर, मनोमय रूप- तत्त्व अपने को और पुष्ट करते हैं। फलत: वे इस हद तक बदले हैं। जब वे अपने खास साइज और अपनी खास काट की अभिव्यक्ति पा लेते हैं, तब उनके तत्त्व और रूप पहले से बहुत कुछ बदले हुए होते हैं। सामाजिक सम्पदा होने के कारण भाषा मनोनय रूप-तत्त्वों को उनके प्रकट होने के दौरान घटा-बढ़ा देती है और अनजाने ढंग से उनमें नए रूप-तत्त्व ला देती है। साथ ही यह अभिव्यक्ति-संघर्ष भाषा को कुछ बदल देता है, उसे नवीन शब्द-संयोग, नवीन अर्थवत्ता और नयी भंगिमाएँ और व्यंजनाएँ देता है। प्रकार कलाकार भाषा का भी निर्माण करता है। अभिव्यक्ति समाप्त होते ही, उसके संघर्ष का अंत होते ही, कला का तीसरा क्षण भी समाप्त होता है।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

लेकिन कहानी में मैं जब सार्थकता की बात कहता हूँ तो इसका यह अर्थ है कि कहानी हमारे जीवन की छोटी से छोटी घटना में भी अर्थ खोज लेती है या उसे अर्थ प्रदान कर देती है। इस युग में जब कि 'निरर्थकता' की भावना व्यापक रूप से फैली हुई है और एक वर्ग के लोगों द्वारा फैलाई भी जा रही है, कहानी

जैसे छोटे गद्य-रूप से सबसे पहले सार्थकता की मांग की जा सकती है। यह नहीं है कि छोटी-छोटी बातें ही अर्थहीन प्रतीत होती हों कुछ लोगों को अपना सारा जीवन ही अर्थहीन मालूम होता है और कुछ को तो दुनिया का सारा कारोबार भी व्यर्थ लगता है। परन्तु लघुता में निरर्थकता का खतरा सबसे अधिक है। कहानी की सृष्टि इसी लघुता को सार्थकता प्रदान करने के लिए हुई थी। लोगों की यह धारणा है कि कहानी जीवन के एक टुकड़े को लेकर चलती है, इसलिए उसमें कोई बड़ी बात कही ही नहीं जा सकती। कहानी जीवन के टुकड़ों में निहित 'अन्तर्विरोध', 'द्वंद्व', 'संक्रान्ति' अथवा क्राइसिस को पकड़ने की कोशिश करती है और ठीक ढंग से पकड़ में आ जाने पर यह खंडगत अन्तर्विरोध की वृहद् अन्तर्विरोध के किसी न किसी पहलू का आभास दे जाता है।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

2. नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु युगीन हिंदी आलोचना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' के आधार पर आचार्य रामचंद्र

शुक्ल की आलोचना की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(15)

अथवा

'दूसरा सप्तक की भूमिका' में निहित अज्ञेय के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. हिंदी आलोचना के विकास में नामवर सिंह के योगदान का विश्लेषण कीजिए। (15)

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 6 printed pages.]

(12) **Your Roll No.** 2022

Sr. No. of Question Paper : 3204 **A**

Unique Paper Code : 12057609

Name of the Paper : Bhartiye Sahitya : Pathparak Adhyayan

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (10×3=30)

(क) देखकर तब विकल क्रौंची,

व्याध-चरित-अधर्म,

बह चली वाणी सहज

ले द्रवित उर का मर्म!

Deshbandhu College Library, Kalkaji, New Delhi-19

P.T.O.

क्रौंच के उस मुग्ध जोड़े से

किया हत, एक,

तू न पायेगा प्रतिष्ठा व्याध!

वर्ष अनेक.

अथवा

कहलवाया है -

सिलेटी पत्थर पर गेरू आदि से

करता हूँ तैयार आँक-आँक के

प्यार में रूठी हुई आकृति तुम्हारी.

फिर मनाने के निमित्त

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

तुम्हारे पैरों पर गिरते हुए

दिखाना चाहता हूँ अपने को उसी में।

कि इतने में उमड़ आते हैं अपरिमित आंसू ,

लुप्त हो जाती है दृष्टि की क्षमता,

कर सकता सहन नहीं निठुर विधाता

इस प्रकार भी हमारा मिलना-जुलना।

(ख) लोभ लहर अति नीझर बाजे, काइआ डूबै केसवा ।।1।।

संसारु समुंदे तारि गोविंदे। तारिलै बाप बीठुला ।।1।

अनिल बेड़ा हउ षेंवि रे साकउ। तेरा पारु न पाइया बीठूला ।।2।।

होहु दइआलु संति गुरु मेलि तू। मोंकउ पारि उतारे केसवा ।।3।।

नामा कहे हउ तरिभि न जानउ । मोकउ बाह देहि बाह देहि बीठुला।।4।।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

आतप से लोगों को बचाने के लिए अपना हरित छत्र

दूर तक फैलाकर खड़े उस अश्वत्थ की वेदी से,

जब तुम, सखियों से छिपाकर, बार-बार

अपने दीर्घ लोचनों की तीक्ष्ण धार से

नातिदूर खड़े मेरे ललाट पर

कुछ शुभाक्षर लिख रही थी, तब

मेरी पलकें गिर गयी और इस तरह उस शुभ मुहूर्त की

कुछ कड़ियों में मैंने स्याही लगा दी!

स्पष्ट प्रकाशमान सूर्य-किरणों में भी

जहाँ-तहाँ मनुष्य लोक दाग लगा देता है.

(ग) आज क्या हस्तिनापुर का सत्यासत्य का विवेक सचमुच ही समाप्त हो गया है? क्या आज हस्तिनापुर में न्याय-अन्याय की लौ बुझ गयी है? इस हस्तिनापुर में क्या किसी में इतनी शक्ति नहीं,जो इस कर्ण के भग्न हृदय की चीत्कार को सुन सके? किसी में इतनी शक्ति नहीं है जो इस कर्ण के तड़पते हुए मन को पहचान सके? महाराज मनु का यह हस्तिनापुर, पराक्रमी नहुष का हस्तिनापुर, दिग्विजयी ययाति का हस्तिनापुर, शांतनु, दुष्यंत और भरत का हस्तिनापुर और जिनकी स्मृति का नगरजन अभी तक नहीं भूले हैं, जिनका प्रस्थान अभी कुछ दिन पूर्व ही हुआ है, उन गुरु का हस्तिनापुर आज इतना ठंडा और विवश - सा क्यों है? आज अन्याय को ठोकर मारने के लिए वह धैर्यपूर्वक छाती ठोंक कर खड़ा क्यों नहीं होता ?

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

पत्र पढ़कर वे कुछ दुःख के साथ बोले, "अंग्रेज हमें खुशामदी

और स्वराज के लिए नालायक कहते हैं, यह यों ही थोड़े ही कहते हैं। ऐसे पत्र में तुम मोली की विद्वता के और दार्शनिक वृति के इतने गुणगान करते हो, यह अनुचित है। और उन्हें पत्र लिखने में तुम्हारे हाथ और कलम काँपने क्यों चाहिए? तुम्हें तो एक व्यावसायिक पत्र लिखना है। उसने फार्बेस सभा में इस काम के लिए तुम्हें किस तरह पसंद किया और तुमने बहुत ध्यान से अनुवाद किया है इतनी ही बातें आनी चाहिए।"

2. 'उत्तर मेघ' के आधार पर कालिदास की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

राम कथा के जन्म से सम्बंधित प्रेरक तत्वों का विवेचन कीजिये।

3. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित 'भारत तीर्थ' कविता में मौजूद राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट कीजिये। (15)

अथवा

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

'ललद्यद शैव मत की सच्ची साधिका हैं' इस कथन के आलोक में ललद्यद के वाख पर विचार कीजिये।

4. 'खून का रिश्ता' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। [15]

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

'हयवदन नाटक की मूल समस्या का विस्तृत विवेचन कीजिये

[This question paper contains 4 printed pages.]

(13)

Your Roll No. 2022

Sr. No. of Question Paper : 3480

A

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएं

Name of the Course : B.A. (H) –Hindi – CBCS

Semester : VI

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

Desbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "भारतमित्र संपादक! जीते रहो- दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी। फिर बैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र में टटोलते हुए 'मोहन मेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ। पहली बार आपकी

बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होना चाहिए, क्योंकि आप संपादक हैं। किंतु आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की-सी निकली जिसने ऊंचे आकाश में चढ़े चढ़े भूमि पर एक गेहूं का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न समझा यहां तक कि उस गेहूं के दाने को चुगने से पहले जाल में फंस गया।"

अथवा

"ग़लतीवश, मोहवश, दुर्भाग्यवश जब से हमने गलितांग को अपना अंग जानकर काट फेंकने से इंकार कर गले से लगाना शुरू किया है, तभी से विष सारे शरीर में व्याप्त हो गया है। अब से पचास-साठ वर्ष पहले अखिल-भारतीय स्तर पर सहस्त्र-सहस्त्र ऐसे ब्रह्मराक्षस पैदा हुए थे जिन्होंने कुकर्मों के स्लो-पॉइजन द्वारा मारते-मारते सनातन धर्म को मार ही डाला! इस पूर्णता से वह सनातन धर्म तो अब पुनः जागने-जीने वाला जिसके सराना ब्राह्मण लोग थे। ब्राह्मण-कुल में मैं भी पैदा हुआ हूं। कोई पूछ सकता है कि सनातन धर्म या ब्राह्मण धर्म के इस विनाश पर मेरी क्या राय है।"

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

(ख) "समस्या यही हैं कि आप अपनी कृतियों को कम-से-कम कितने पुरस्कार पर दान दे सकते हैं? आप की कृतियों के साथ ही उस उत्कृष्ट कवि-हृदय को कोई पुरस्कार तो क्या देगा पर

रायसाहब 'पत्रं-पुष्पं-फलं' से सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं। उनका प्रकाशन-कार्य अभी नया हैं अतः पुरस्कार के मामले में वह एकाएक कलकत्ता और बंबई के प्रकाशकों का मुकाबिला नहीं कर सकते, फिर भी आप जो पुरस्कार उचित समझते हो, लिखें। अविलंब किन शर्तों पर आपकी कृतियों का अधिकार मिल सकता हैं। अवश्य लिखिए।"

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

"इस विचार को अब तक भिन्न-भिन देशों में कितना क्रियात्मक रूप मिल चुका है यह प्रत्येक जिज्ञासु को ज्ञात होगा। पश्चिमीय तथा पूर्वीय जगत देशों में स्त्रियों ने उन बेड़ियों को काट डाला है जिनमें पुरुषों ने बर्बरता के युग में उन्हें बांध कर अपने स्वामित्व का क्रूर प्रदर्शन किया था। उन देशों की महिलाएं राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार के अधिकारों द्वारा अपनी शक्तियों का विकास कर, गृह तथा बाह्य संसार में पुरुषों की सहयोगिनी बनकर अपने देश और जाति के उत्कर्ष का कारण बन रही हैं, अपकर्ष का नहीं।" (8+7=15)

2. 'जातियों का अनूठापन' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'मजदूरी और प्रेम' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

P.T.O.

3. 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' निबंध का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'बैष्णव की फिसलन' निबंध की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'अपनी खबर' आत्मकथा का संक्षिप्त सार प्रस्तुत कीजिए। (15)

अथवा

जीवनी के तत्वों के आधार पर 'निराला की साहित्य साधना' (नए संघर्ष) की समीक्षा कीजिए।

5. 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृत्तांत की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'सुभान खां पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

[This question paper contains 2 printed pages.]

(14)

Your Roll No. 2022

Sr. No. of Question Paper : 3277 **A**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणा साहित्यिक पद

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

1. शब्दालंकार और अर्थालंकार का अंतर स्पष्ट करते हुए उपमा अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए। (12)

अथवा

छंद की परिभाषा देते हुए मात्रिक और वार्णिक छंदों के अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

2. भारतीय काव्य चिंतन में वर्णित काव्य-हेतू विषय पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

गीति काव्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3. जादुई यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

संरचनावाद की प्रमुख स्थांपनाओं की विवेचना कीजिए।

4. उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

आधुनिकता की प्रमुख स्थापनाओं पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×9=27)

(i) स्वछंदतावाद

(ii) लक्षणा शब्द शक्ति

(iii) रस-निष्पत्ति

(iv) नाटक

(v) मानववाद

(vi) त्रासदी

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19